सत्यमेंव जयते

लाल कृष्ण आडवाणी
उप प्रधान-मंत्री

संदेश

प्रिय देशवासियों,

हिंदी दिवस के इस पावन अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं !

हमारे लिए यह एक सुखद अनुभूति है कि भारत अनेक समृद्ध भाषाओं से परिपूर्ण है । हमारी भाषाओं ने हमें समय-समय पर प्रेरणा और मार्गदर्शन दिया है । स्वतंत्रता आंदोलन में राष्ट्रीय चेतना जागृत करने और सारे राष्ट्र को एक मजबूत समाज के रूप में उभारने में हिंदी ने एक मूल्यवान भूमिका निभाई है । उसकी परिणति 14 सितम्बर, 1949 में हिंदी को राजभाषा का स्थान देने से हुई है । इसी राष्ट्रीय निर्णय को मनाने के लिए आज के दिन हम राजभाषा हिंदी संबंधी अपने प्रयासों और भावी कार्यक्रमों का लेखा जोखा लेते हैं ।

हमें आपसी सौहार्द और भाईचारे से हिंदी का प्रयोग बढ़ाना है । इससे हमारी सामाजिक और राष्ट्रीय एकता मजबूत होगी और गणतंत्र को बल मिलेगा । सरकार और जनता के बीच का सामंजस्य बढ़ेगा । सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक न्याय सभी नागरिकों को समान रूप से उपलब्ध हो सकेगा । हिंदी के उन्नयन और प्रसार में स्वैच्छिक संस्थाओं, इलेक्ट्रानिक मीडिया और प्रेस की विशेष भूमिका है । प्रेस और मीडिया की कर्मभूमि देश के सभी भाषाई क्षेत्र हैं । मुझे आशा है कि स्वैच्छिक संस्थाएं, दूरदर्शन, आकाशवाणी सहित समस्त मीडिया और प्रेस इस काम में योगदान करेंगे । इसी प्रकार सभी विषयों के लेखक भी हिंदी भाषा में स्तरीय पुस्तकें लिखकर अपना योगदान दें तो एक प्रशंसनीय कार्य करेंगे । प्रकाशकों से मेरा विशेष आग्रह है कि वे हिंदी भाषा के लेखकों की पुस्तकों का उत्साहपूर्ण प्रकाशन करें जिससे हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार बढ़ सके ।

केन्द्र सरकार का सारा काम राजभाषा हिंदी में होना अपेक्षित है । राजकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को निष्ठा और उत्साह से काम करना चाहिए । मुझे आशा है कि सभी अधिकारी और कर्मचारी अपने इस दायित्व को पूरी निष्ठा से निभायेंगे ।

- वंदे मातरम् -

T.R. Prasad

सत्यमेंव जयते

मंत्रीमंडल सचिव
CABINET SECTRTARY
NEW DELHI

संदेश

देश की संविधान सभा ने 14 सितम्बर, 1949 को यह निर्णय लिया था कि देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी भाषा हमारी राजभाषा होगी ।

2. भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है । हिन्दी राष्ट्रीय एकता, संस्कृति और जनसंपर्क का सबसे उत्तम सूत्र है । संविधान में वर्णित सभी प्रांतीय भाषाओं का आदर करते हुए, इस विशाल देश को एक सूत्र में बांधने में भी हिन्दी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है ।

3. गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/ विभागों को हर वर्ष एक वार्षिक कार्यक्रम जारी करता है । इसमें ऐसे प्रयोजनार्थ विभिन्न लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं । इनकी प्राप्ति के लिए मंत्रालयों/ विभागों को भरपूर प्रयास करने चाहिए । सूचना प्रौद्योगिकी की मदद से यह कार्य और सुचारु ढ़ंग से किया जा सकता है ।

4. हिन्दी के उत्तरोत्तर प्रयोग में वृद्धि हुई है, फिर भी इस दिशा में अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है । अतः हमें सरकारी कामकाज़ में हिन्दी का अधिक से अधिक इस्तेमाल करना चाहिए ।

(टी.आर. प्रसाद)

अर्जुन चरण सेठी
जल संसाधन मंत्री

सत्यमेंव जयते

भारत सरकार

जल संसाधन मंत्रालय

संदेश

भारत एक बहुभाषी देश है । सभी भाषाएं अपने आप में समृद्ध और सक्षम हैं । हमारे संविधान निर्माताओं ने हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया है । यह किसी क्षेत्र विशेष की भाषा नहीं है, वरन इसे पूरे हिन्दुस्तान की भाषा मानकर सम्पर्क भाषा के रुप में इसका विकास करना होगा तभी हम इसे उचित दर्जा देकर अपने देश की अस्मिता को बनाए रख सकते हैं । राष्ट्रहित में हमें अपनी राष्ट्रभाषा को उसकी गरिमा देकर उसका गौरव बढ़ाना है ।

आप सबसे हमारा यही आग्रह है कि जल संसाधन मंत्रालय में मनाए जा रहे हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर सरकारी कामकाज़ जितना ज्यादा से ज्यादा हो सके, हिन्दी में ही करें ।

अर्जुन चरण सेठी
जल संसाधन मंत्री

विजया चक्रवर्ती
जल संसाधन राज्य मंत्री

सत्यमेव जयते
भारत सरकार
जल संसाधन मंत्रालय

अपील

भारत में लोकतंत्र की सफलता के लिए आवश्यक है कि हमारा कामकाज़ जनता की भाषा में हो। भारत बहुभाषी देश है। हमने देश की 18 भाषाओं को मान्यता दी है और ये सभी भाषाएं हम सबको एकता के सूत्र में पिरोए हुए हैं। हिन्दी किसी क्षेत्र विशेष की भाषा नहीं है, अपितु इसका प्रयोग पूरे भारत में होता है, इसीलिए संविधान निर्माताओं ने हिन्दी को देश की राजभाषा का दर्जा दिया है। राष्ट्रहित में हमें अपनी राष्ट्रभाषा को उसकी अस्मिता, उसका गौरव, उसका उचित स्थान देते हुए अपने संवैधानिक दायित्व को निभाना है। आजादी मिले हुए 50 वर्षों से भी अधिक का समय व्यतीत हो चुका है, किन्तु हम सरकारी कामकाज़ में हिन्दी को वह स्थान नहीं दिला सके जो बहुत पहले ही दिया जाना चाहिए था। आज हिन्दी दिवस है। आप सबसे मेरा यही आग्रह है कि इस शुभ अवसर पर जल संसाधन मंत्रालय तथा इसके अधीन आने वाले कार्यालयों के सभी अधिकारीगण और कर्मचारी गण मिलकर यह संकल्प करें कि हम अपने निजी व दैनिक सरकारी कामकाज में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करेंगे। आज स्वर्गीय बाबू मैथिलीशरण गुप्त की ये पंक्तियां याद आती हैं: -

सुख शांतिमय सरकार का शासन समय है अब यहाँ,
सुविधा समुन्नति के लिए है प्राप्त हमको सब जहाँ,
अब भी यदि कुछ कर न सकें हम तो हमारी भूल है,
अनुकूल अवसर की अपेक्षा हूलती फिर शूल है।

विजया चक्रवर्ती
जल संसाधन राज्य मंत्री

डा. कोटा श्री रामा शास्त्री
निदेशक

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान,
रूड़की-247667 (उत्तरांचल)

संदेश

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि गत वर्षों की भांति राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान इस वर्ष भी अपनी वार्षिक हिन्दी पत्रिका प्रवाहिनी के दशम् अंक का प्रकाशन कर रहा है । यह अंक संस्थान की स्थापना के रजत जयन्ती वर्ष में जारी हो रहा है ।

स्वाधीनता के 56 वर्षों के बाद आज देश का लगभग हर नागरिक अपने को गौरवान्वित महसूस करता है । इसका श्रेय मुख्य रूप से उन वैज्ञानिकों, अभियन्ताओं, तकनीशियनों एवं शिक्षाविदों को जाता है, जिन्होंने अपने अथक प्रयासों के माध्यम से हरित, नील तथा श्वेत क्रांति को सफल बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया । देश के हर क्षेत्र में, चाहे वह कम्प्यूटर का क्षेत्र हो, सूचना क्रांति, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, प्रतिरक्षा तकनीक, जल संसाधन, ऊर्जा उत्पादन, साहित्य, प्रकाशन अथवा प्रबन्धन का क्षेत्र हो, चहुंमुखी विकास एवं प्रगति हुई है । देश की प्रगति तथा आत्मसम्मान में हुई इस प्रगति पर हमें गर्व है । विगत वर्षों में जनसंख्या विस्फोट तथा जल की बढ़ती मांग और जलापूर्ति के बीच के असंतुलन के फलस्वरूप जल संसाधन विकास में और चुनौतियाँ हमारे सम्मुख हैं । इस दिशा में हमें और अधिक सफलता अर्जित करने की आवश्यकता है तथा इसे और विकासोन्मुख बनाना होगा । हमें विश्वास है कि जल वैज्ञानिक एवं इस क्षेत्र से जुड़े लोग जल संसाधन क्षेत्र की सभी वर्तमान चुनौतियों का सामना करते हुए देश को स्वावलंबी तथा भविष्य को उज्जवल बनाने हेतु निरन्तर प्रयास करते रहेंगे ।

हिन्दी का दैनिक कार्यकलापों तथा कार्यान्वयन की दिशा में इस संस्थान ने प्रशंसनीय विकास किया है और प्रत्याशा है कि आगे भी हम सभी हिन्दी को राजभाषा के रूप में कार्यान्वयन करने तथा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहेंगे । हमारा विश्वास है कि संस्थान का हर संभव प्रयास राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में उत्तरोत्तर वृद्धि करना होगा तथा प्रवाहिनी के रूप में ज्ञानगंगा का प्रवाह हमें सदैव लाभान्वित करता रहेगा ।

प्रवाहिनी के इस दशम् अंक को सुरुचिपूर्ण बनाने, इसके सफल सम्पादन तथा समय से प्रकाशन हेतु मैं इससे जुड़े समस्त लेखक, रचनाकार, टंकणकर्ता, मुद्रक तथा सम्पादक मंडल के सदस्यों को उनके बहुमूल्य योगदान हेतु धन्यवाद देता हूँ और आशा करता हूँ कि प्रस्तुत अंक विद्वान पाठकों के लिए रूचिकर होगा ।

(कोटा श्री रामा शास्त्री)